Information of Press Council of Maharashtra

ISSN NO. (Online/E-Journal): 3139-499X | Vol. 1 | Issue 2, April to June 2026

Article 4 | Language: Hindi | Published: April to June 2026

पत्रकार और भारतीय न्याय व्यवस्था : पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और लोकतंत्र की सुदृढ़ता का आधार

Dr. Parveen Yakub Shaikh Ansari

ABSTRACT

भारतीय लोकतंत्र में न्यायपालिका और पत्रकारिता दोनों को अत्यंत महत्वपूर्ण संस्थाओं के रूप में देखा जाता है, जहां न्यायपालिका नागरिकों को न्याय प्रदान करने का सर्वोच्च मंच है, वहीं पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, जो शासन और समाज के बीच संवाद स्थापित करने का कार्य करती है। प्रस्तुत लेख में पत्रकार और भारतीय न्याय व्यवस्था के बीच संबंधों की गहराई, उनकी भूमिकाओं, जिम्मेदारियों, चुनौतियों तथा नैतिक सीमाओं का व्यापक विश्लेषण किया गया है। विशेष रूप से न्यायिक पारदर्शिता, मीडिया ट्रायल, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, न्यायालय की अवमानना, डिजिटल मीडिया के प्रभाव तथा सूचना के अधिकार जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई है। लेख यह स्पष्ट करता है कि पत्रकारिता और न्यायपालिका के बीच संतुलित, जिम्मेदार और संवेदनशील संबंध लोकतंत्र की मजबूती और नागरिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए अनिवार्य है।

<h2 style="text-align: left;">प्रस्तावना</h2>
<p>भारत एक विशाल, विविधतापूर्ण और सुदृढ़ लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जिसकी शासन व्यवस्था संविधान के सिद्धांतों पर आधारित है। इस व्यवस्था के तीन प्रमुख स्तंभ—विधायिका, कार्यपालिका और

न्यायपालिका—देश के प्रशासन और न्यायिक प्रणाली को संचालित करते हैं। इन तीनों के अतिरिक्त पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है, जो समाज में जागरूकता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

भारतीय न्याय व्यवस्था नागरिकों को उनके मौलिक अधिकारों की रक्षा और न्याय प्रदान करने का कार्य करती है, जबकि पत्रकारिता न्यायिक प्रक्रियाओं, फैसलों और महत्वपूर्ण मामलों को जनता तक पहुंचाकर लोकतंत्र को जीवंत बनाए रखती है। इन दोनों संस्थाओं के बीच एक गहरा और संवेदनशील संबंध होता है, जो कभी सहयोगात्मक तो कभी आलोचनात्मक रूप में सामने आता है।

आज के डिजिटल युग में जहां सूचना का प्रवाह अत्यंत तीव्र हो गया है, वहां पत्रकारों की जिम्मेदारी और भी बढ़ गई है कि वे न्यायिक मामलों की रिपोर्टिंग में सत्यता, निष्पक्षता और संतुलन बनाए रखें, ताकि न्यायपालिका की गरिमा और जनता का विश्वास दोनों सुरक्षित रह सकें।

<h2 style="text-align: left;"><span lang="MR" style="font-family: 'Arial Unicode MS',

'sans-serif';">भारतीय न्याय व्यवस्था की संरचना और कार्यप्रणाली</h2>
भारतीय न्याय व्यवस्था एक सुव्यवस्थित और बहुस्तरीय प्रणाली है, जिसमें विभिन्न स्तरों पर न्यायालय कार्य करते हैं। सर्वोच्च न्यायालय देश का सर्वोच्च न्यायिक निकाय है, जो संविधान की व्याख्या करता है और अंतिम अपील का अधिकार रखता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक राज्य में उच्च न्यायालय होते हैं, जो राज्य स्तर पर न्यायिक कार्यों का संचालन करते हैं, तथा जिला और अधीनस्थ न्यायालय स्थानीय स्तर पर न्याय प्रदान करते हैं।
इस न्यायिक संरचना का मुख्य उद्देश्य कानून के शासन को स्थापित करना, नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करना और समाज में न्याय तथा समानता सुनिश्चित करना है। न्यायपालिका की स्वतंत्रता भारतीय लोकतंत्र की आधारशिला मानी जाती है, क्योंकि यह अन्य संस्थाओं के कार्यों की समीक्षा और नियंत्रण का कार्य भी करती है।
<span lang="MR" style="font-size: 10.0pt; mso-ansi-font-size: 11.0pt; line-height: 115%; font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: Calibri; mso-ascii-theme-font: minor-latin; mso-fareast-font-family: Calibri; mso-fareast-theme-font: minor-latin; mso-hansi-font-family: Calibri; mso-hansi-theme-font: minor-latin; mso-ansi-language: EN-IN; mso-fareast-language: EN-US; mso-bidi-language: MR;">पत्रकारों के लिए इस जटिल न्यायिक प्रणाली को समझना और उसे सरल भाषा में जनता तक पहुंचाना एक महत्वपूर्ण चुनौतीपूर्ण कार्य होता है<span style="font-size: 11.0pt; mso-bidi-font-size: 10.0pt; line-height: 115%; font-family: 'Calibri','sans-serif'; mso-ascii-theme-font: minor-latin; mso-fareast-font-family: Calibri; mso-fareast-theme-font: minor-latin;

mso-hansi-theme-font: minor-latin; mso-bidi-font-family: Mangal; mso-ansi-language: EN-IN; mso-fareast-language: EN-US; mso-bidi-language: MR;">, <span lang="MR" style="font-size: 10.0pt; mso-ansi-font-size: 11.0pt; line-height: 115%; font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: Calibri; mso-ascii-theme-font: minor-latin; mso-fareast-font-family: Calibri; mso-fareast-theme-font: minor-latin; mso-hansi-font-family: Calibri; mso-hansi-theme-font: minor-latin; mso-ansi-language: EN-IN; mso-fareast-language: EN-US; mso-bidi-language: MR;">जो उनकी जिम्मेदारी और दक्षता दोनों की परीक्षा लेता है।

<h2 style="text-align: left;">न्याय व्यवस्था में पत्रकारों की विस्तृत भूमिका</h2>

पत्रकार न्यायिक प्रक्रिया और समाज के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं। वे न्यायालयों में होने वाली कार्यवाही, महत्वपूर्ण निर्णयों, संवैधानिक मुद्दों और जनहित याचिकाओं को जनता तक पहुंचाकर लोकतांत्रिक संवाद को सशक्त बनाते हैं।

वे न केवल न्यायालयों की गतिविधियों को रिपोर्ट करते हैं, बल्कि न्यायिक प्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही को भी सुनिश्चित करते हैं। कई बार पत्रकारों की खोजी रिपोर्टिंग के कारण महत्वपूर्ण मामलों का खुलासा होता है, जिससे न्यायपालिका का ध्यान उन मुद्दों की ओर आकर्षित होता है, जो अन्यथा अनदेखे रह जाते।

इसके अतिरिक्त, पत्रकार समाज के कमजोर और वंचित वर्गों की आवाज को न्यायपालिका तक पहुंचाने का कार्य भी करते हैं। वे जनहित के मुद्दों को उजागर कर न्यायिक हस्तक्षेप की

आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। इस प्रकार पत्रकारिता केवल सूचना देने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी बनती है।
<h2 style="text-align: left;">मीडिया ट्रायल : न्यायिक निष्पक्षता के लिए चुनौती</h2>
मीडिया ट्रायल वर्तमान समय में पत्रकारिता और न्याय व्यवस्था के संबंधों में सबसे अधिक विवादास्पद विषयों में से एक बन गया है। जब मीडिया किसी मामले में न्यायालय के निर्णय से पहले ही आरोपी के बारे में निष्कर्ष प्रस्तुत करने लगता है, तो यह न्यायिक प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है।
मीडिया ट्रायल के कारण समाज में पूर्वाग्रह उत्पन्न हो सकता है, जिससे न्यायाधीशों पर अप्रत्यक्ष दबाव बनता है और निष्पक्ष न्याय प्रभावित हो सकता है। इसके अलावा, यह आरोपी के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन भी कर सकता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को न्यायालय द्वारा दोषी सिद्ध होने तक निर्दोष माना जाता है।
इसलिए आवश्यक है कि पत्रकार न्यायिक मामलों की रिपोर्टिंग में अत्यधिक सावधानी बरतें और केवल तथ्यों के आधार पर ही जानकारी प्रस्तुत करें, न कि किसी निष्कर्ष या अनुमान के आधार पर।
<h2 style="text-align: left;">अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और उसकी सीमाएं</h2>
<span lang="MR" style="font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family:

'Times New Roman'; mso-fareast-font-family: 'Times New Roman'; mso-hansi-font-family: 'Times New Roman';">भारतीय संविधान पत्रकारों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करता है, जो लोकतंत्र के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह स्वतंत्रता पत्रकारों को निष्पक्ष और स्वतंत्र रूप से रिपोर्टिंग करने की अनुमति देती है।

हालांकि, यह स्वतंत्रता पूर्ण नहीं है और इसके साथ कुछ जिम्मेदारियां और सीमाएं भी जुड़ी होती हैं। न्यायालय की अवमानना, उप-न्यायाधीन मामलों पर टिप्पणी और न्यायपालिका की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाले कार्यों पर प्रतिबंध लगाया गया है।

पत्रकारों के लिए यह आवश्यक है कि वे इन सीमाओं का सम्मान करते हुए अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करें, ताकि न्यायपालिका की प्रतिष्ठा और न्यायिक प्रक्रिया की निष्पक्षता बनी रहे।

<h2 style="text-align: left;">सूचना का अधिकार और पारदर्शिता</h2>

सूचना का अधिकार अधिनियम ने पत्रकारों को सरकारी और प्रशासनिक कार्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का एक प्रभावी माध्यम प्रदान किया है। इससे न्यायिक और प्रशासनिक पारदर्शिता में वृद्धि हुई है और भ्रष्टाचार के मामलों का खुलासा करना संभव हुआ है।

हालांकि, न्यायपालिका के कुछ पहलुओं में गोपनीयता बनाए रखना आवश्यक होता है, <span lang="MR" style="font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: 'Times New Roman'; mso-fareast-font-family: 'Times New Roman'; mso-hansi-

font-family: 'Times New Roman';">जैसे कि न्यायाधीशों की नियुक्ति प्रक्रिया या संवेदनशील मामलों की जानकारी। ऐसे में पारदर्शिता और गोपनीयता के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।
<h2 style="text-align: left;">डिजिटल मीडिया और न्यायिक रिपोर्टिंग का बदलता स्वरूप</h2>
डिजिटल क्रांति ने पत्रकारिता के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। आज समाचार वेबसाइट्स, सोशल मीडिया और लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से न्यायालय की कार्यवाही तुरंत जनता तक पहुंच जाती है।
यह त्वरित सूचना प्रसार जहां एक ओर जागरूकता बढ़ाता है, वहीं दूसरी ओर गलत या अपुष्ट जानकारी के प्रसार का खतरा भी बढ़ा देता है। डिजिटल मीडिया में प्रतिस्पर्धा और तेजी के कारण कई बार सत्यापन की प्रक्रिया कमजोर पड़ जाती है, जिससे गलत रिपोर्टिंग की संभावना बढ़ जाती है।
<span lang="MR" style="font-size: 10.0pt; mso-ansi-font-size: 11.0pt; line-height: 115%; font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: Calibri; mso-ascii-theme-font: minor-latin; mso-fareast-font-family: Calibri; mso-fareast-theme-font: minor-latin; mso-hansi-font-family: Calibri; mso-hansi-theme-font: minor-latin; mso-ansi-language: EN-IN; mso-fareast-language: EN-US; mso-bidi-language: MR;">इसलिए डिजिटल युग में पत्रकारों के लिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि वे तथ्यों की पुष्टि करें और जिम्मेदारी के साथ रिपोर्टिंग करें।
<h2 style="text-align: left;">नैतिकता और जिम्मेदार पत्रकारिता</h2>
न्यायिक मामलों की रिपोर्टिंग में नैतिकता का विशेष महत्व होता है। पत्रकारों को चाहिए कि वे निष्पक्षता, <span lang="MR" style="font-family: 'Arial Unicode MS','sans-serif'; mso-ascii-font-family: 'Times New Roman'; mso-fareast-font-family: 'Times New Roman'; mso-hansi-font-

family: 'Times New Roman';">सत्यता और संवेदनशीलता के सिद्धांतों का पालन करें।
उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी रिपोर्टिंग किसी भी पक्ष के प्रति पक्षपाती न हो और न ही किसी की छवि को अनावश्यक रूप से नुकसान पहुंचाए। विशेष रूप से संवेदनशील मामलों जैसे यौन अपराध, बाल अपराध और पारिवारिक विवादों में गोपनीयता और संवेदनशीलता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक होता है।
जिम्मेदार पत्रकारिता न केवल न्यायपालिका की गरिमा को बनाए रखती है, बल्कि समाज में विश्वास और संतुलन भी स्थापित करती है।
<h2 style="text-align: left;">पत्रकार और न्यायपालिका के बीच संतुलन की आवश्यकता</h2>
पत्रकारिता और न्यायपालिका दोनों ही लोकतंत्र के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं, लेकिन इनके कार्यक्षेत्र और जिम्मेदारियां अलग-अलग हैं। पत्रकारों का कार्य सूचना देना और जनमत तैयार करना है, जबकि न्यायपालिका का कार्य न्याय प्रदान करना है।
इन दोनों के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है, ताकि कोई भी संस्था दूसरी के कार्य में अनावश्यक हस्तक्षेप न करे। एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए यह जरूरी है कि पत्रकारिता स्वतंत्र रहे और न्यायपालिका निष्पक्ष, लेकिन दोनों एक-दूसरे के अधिकारों और सीमाओं का सम्मान करें।

<h2 style="text-align: left;">निष्कर्ष</h2>
पत्रकार और भारतीय न्याय व्यवस्था के बीच संबंध अत्यंत गहरा, जटिल और संवेदनशील है। जहां पत्रकारिता न्यायिक प्रक्रियाओं को जनता तक पहुंचाकर पारदर्शिता और जागरूकता बढ़ाती है, वहीं न्यायपालिका कानून के शासन को बनाए रखते हुए न्याय प्रदान करती है।
मीडिया ट्रायल, डिजिटल मीडिया की चुनौतियां, और नैतिक दुविधाएं इस संबंध को और अधिक जटिल बनाती हैं। ऐसे में आवश्यक है कि पत्रकार अपनी जिम्मेदारियों को समझें और निष्पक्षता, सत्यता और नैतिकता के साथ कार्य करें।
अंततः, एक मजबूत और सुदृढ़ लोकतंत्र के लिए स्वतंत्र और जिम्मेदार पत्रकारिता तथा निष्पक्ष और पारदर्शी न्याय व्यवस्था का समन्वय अत्यंत आवश्यक है। यही समन्वय समाज में न्याय, समानता और विश्वास की स्थापना का आधार बनता है।

© 2026 Press Council of Maharashtra. All rights reserved.

Downloaded: 01 Nov 2026, 3:20 PM IST